कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी भाषा के अध्ययन अध्यापन की समस्यायें

अजय कुमार श्रीवास्तव*

सारः–

आधुनिक युग सूचना क्रांति का युग कहा जाता है। रोज नये–नये ज्ञान तथा तकनीक आधुनिक युग मे सूचना क्रांति के क्षेत्र में विकसित हो रही हैं। भारत पर भी दुनिया के अन्य देषों की तरह इसका प्रभाव पड़ रहा है। भारतीय भाषाओं तथा लिपियों का विकास टंकण की प्रमुखता को ध्यान में रख कर नही किया गया वरन इन्हें उच्चारण तथा बोलने की कुषलता को ध्यान में रख कर किया गया। आधुनिक युग में कम्प्यूटर के माध्यम से दी जाने वाली षिक्षण प्रक्रिया मे भारतीय भाषाएं अंग्रेजी की अपेक्षा सही रूप में अपना काम नही कर पाती। साथ ही इनके संचालन की प्रक्रिया का प्रमुख माध्यम अंग्रेजी होने के कारण भारतीय भाषाओं को इसके माध्यम से पठन–पाठन मे असुविधा महसूस होती है। देष की 60% जनसंख्या कम्प्यूटर के षिक्षण प्रक्रिया के प्रयोग से अनभिज्ञ है। यद्यपि अब भारतीय भाषाओं में भी साफ्टवेयर तैयार किए जा रहे हैं तथा काम होने लगा है। सभी स्कूलों में कम्प्यूटर के प्रयोग की षिक्षा दी जा रही है परन्तु उसमें बहुत सी समस्याएं भी आ रही हैं जिन पर विचार करते हुए उसे समाधान की ओर ले जाना तथा सूचना के क्षेत्र में सभी को ज्यादा से ज्यादा जोड़ना बहुत जरूरी है।

प्रस्तावनाः–

भारत मे षिक्षण – प्रषिक्षण की प्रक्रिया सबसे पुरानी है। दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद में भी गुरू–षिष्य से सम्बन्धित प्रष्नोत्तर वाद–विवाद, विचार–विमर्ष को बड़े प्रभावषाली तथा व्यापक स्तर पर देखा जा सकता है। आधुनिक समय में सूचना क्रांति के आगमन से भारत में भी षिक्षण प्रक्रिया में बहुत सा परिवर्तन दिखाई देता है। यह परिवर्तन यद्यपि विज्ञान तथा अन्य विषयों में तो अपना प्रभाव छोड़ने में सफल रहा है परन्तु भाषा और साहित्य के क्षेत्र में इसका प्रयोग अभी बहुत धीमी गति से चल रहा है। रोजमर्रा की जिंदगी में मोबाइल या फोन से बात–चीत तक ही सीमित है और ज्यादा देखा जाए तो सिर्फ टंकण और मुद्रण तक ही इसका प्रभाव है बाकी अध्ययन और अध्यापन में यह बहुत ज्यादा सफल नही हो पाया है।

© CGCTA

इसके पीछे बहुत हद तक परम्परागत षिक्षण प्रक्रिया तथा परम्परागत साहित्याध्यापकों का होना है। दो पीढ़ियों का अंतर साफ झलकता है साथ ही

*सहायक प्रोफेसर–हिन्दी,राजकीय षिक्षा कालेज, चंडीगढ़।

पुरानी पीढ़ी कम्प्यूटर के प्रयोग को पूरी तरह से स्वीकार नही कर पा रही है और नयी पीढ़ी इस प्रक्रिया को बड़ी तेजी से आत्मसात् कर आगे निकल जाना चाहती है। इसलिए दोनो के बीच उचित सामंजस्य का अभाव सार्थक एवं प्रभावषाली परिणाम प्राप्त करने में समस्या बनता जा रहा है। जिसका समाधान अति आवष्यक है।

कम्प्यूटर का षिक्षण प्रक्रिया में प्रयोगः–

आज दुनिया के कोने–कोने से सूचनाएं प्राप्त हो रही हैं, तथा घर बैठे आदमी दुनिया से जुड़ जा रहा है। किसी भी देष में होने वाले किसी भी प्रकार के परिवर्तन से पूरी दुनिया प्रभावित होती है। इससे षिक्षण का क्षेत्र भी अछूता कैसे रह सकता है? कम्प्यूटर के अंतर्जाल के माध्यम से पत्रव्यवहार, जानकारी प्राप्त करना, सूचनाओं को सुरक्षित रखना तथा उनका ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना एक षिक्षक के लिए बहुत जरूरी है। यदि आज अध्यापक कम्प्यूटर नही जानता तो वह षिक्षा के क्षेत्र मे विकलांग माना जाता है। नयी नयी सूचनाओं को इकठठा करना, उसे प्रभावषाली ढंग से प्रस्तुत करना तथा समय के साथ–साथ चलते हुए अपने आपको अपडेट करना आज की आवष्यकता बन गयी है। इसलिए आज पाठ का षिक्षण activity का प्रयोग अब कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाना आवष्यक बन गया है। नित नयी नयी तकनीक के माध्यम से अपनी षिक्षण प्रक्रिया को नवीनता देना पूरी कक्षा को नया रूप देना, प्रभावषाली ढंग से षिक्षण प्रक्रिया को सम्पन्न करना तथा बच्चो में प्रभावषाली ढंग से विषय वस्तु के प्रति जिज्ञासा व उत्सुकता का भाव जागृत करना प्रमुख होता जा रहा है। इससे षिक्षण प्रक्रिया सरल, रूचिकर बनती जा रही है। परन्तु यदि अध्यापक तैयार नही है या स्कूल मे पर्याप्त संसाधनों का अभाव है तो यह सारी प्रक्रिया धरी की धरी रह जाती है और समय की बर्बादी होती है। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह होता है कि कम्प्यूटर से पढ़ाई करने वाले बच्चे अध्यापक की स्वतः षिक्षण प्रक्रिया से पढ़ना ही नही चाहते साथ ही अध्यापक लगातार कम्प्यूटर से पढ़ाते– पढ़ाते इतना अभ्यस्त होता है कि जरूरत

पड़ने पर अब वह आत्मविष्वास के साथ कम्प्यूटर के बिना पढ़ा ही नही पाता। यह षिक्षण प्रक्रिया में ICT का एक बड़ा दोष है।

हिन्दी भाषा और कम्प्यूटरः–

आज की सूचना प्रौद्योगिकी विषेष रूप से कम्प्यूटर का विकास मूलतः अंग्रेजी भाषा में हुआ है। इसलिए उसके नाम से लेकर उसके कार्य तक में अंग्रेजी भाषा की जानकारी अति आवष्यक है। इसलिए भारत की अन्य भाषाओं के साथ–साथ हिन्दी भाषा में सही सही सूचनाओं को प्राप्त करना बड़ा ही कठिन काम है। कम्प्यूटर की संचालन प्रक्रिया अंग्रेजी में होने के कारण इसका पूर्ण प्रयोग वही कर पाते हैं जिन्हें अंग्रेजी की जानकारी है। परन्तु हमारे देष में 40 करोड़ के आस पास हिन्दी बोलने और समझने वाले हैं इनमें भी मात्र 5% ही ऐसे हैं जिन्हें अंग्रेजी बोलना समझना आता है। इससे बाकी जनसंख्या अनपढ़ नजर आने लगती है। क्योकि हिन्दी भाषा की लिपियों का विकास ही ध्वन्यात्मकता को आधार बना कर किया गया है। इसलिए ज्यादातर हिन्दी को पढ़ने वाले अध्यापकों और छात्रों को कम्प्यूटर का भरपूर उपयोग करना नही आता। साथ ही इस माध्यम से षिक्षक की अपनी अभिव्यक्ति बाधित होती है क्योंकि कम्प्यूटर पर पढ़ाने की अपनी सीमाएं हैं। वहाँ कल्पना को कम जगह मिल पाती है। यदि कम्प्यूटर के माध्यम से कुछ नया करने की कोषिष की जाती तो वहाँ कम्प्यूटर के प्रयोग की अज्ञानता सामने आ जाती है। बहुत से साफ्ट्वेयर हिन्दी में बनाए जा रहें हैं परन्तु उनके उपयोग का तरीका कठिन है और इसका लगातार प्रयोग न किया जाए तो वह बड़ी जल्दी भूल भी जाता है। जबकि अंग्रेजी में ऐसा नही है। अनुवाद करने वाले साफ्ट्वेयर को सही ढंग से अनुवाद करने को कौन कहे वह वाक्य भी सीधा–सीधा नही बना पाते। कठिन शब्दों की अजीब हिन्दी लिखते हैं जो समझने के बाहर है। उससे समस्या का समाधान नही होता वरन और ज्यादा समस्यायें आने से दिमाग भी परेषान हो जाता है तथा कार्य करने की क्षमता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। हमाने यहाँ हिन्दी भाषा षिक्षक के विद्यार्थियों को हिन्दी में PPT बनाने को देने पर वह अनेक परेषानियां गिनाते हैं तथा वह इसी काम को अंग्रेजी में करने के लिए आसानी से तैयार हो जाते हैं। इसी तरह भाषा की प्रवाहशीलता तथा प्रभावषीलता भी बाधित होती है। साथ ही कम्प्यूटर पर टाइप करने की कला का बुरा प्रभाव हाथ से लिखने पर भी पड़ रहा है। अक्सर टाइप करने के बाद किसी और जगह मेंल द्वारा

भेजने में फांट की समस्या आती है। यदि उस कम्प्यूटर में वह फांट नही है तो भेजी गई साम्रगी की लिखावट भी ऐसी होती है जो चाइनीज भाषा में नजर आती है जिसे पढ़ना असंभव हो जाता है।

हिन्दी भाषा षिक्षण में कम्प्यूटर द्वारा पढ़ाये जाने की समस्यायेंः–

हिन्दी भाषा के षिक्षण प्रषिक्षण में कम्प्यूटर द्वारा पढ़ाये जाने की अनेक समस्यायें है जिससे सुचारू रूप से इस तकनीक का प्रयोग नही हो पा रहा है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैंः–

1. हिन्दी भाषा में सूचना प्रौद्योगिकी विशेष रूप से कम्प्यूटर के प्रयोग का व्यापक प्रचार नही हो पाया है। कुछ चुनिंदा शहरों तक ही इसका प्रयोग किया जा रहा है। इसलिए इसके विषय में देष मे रहने वाली आधी अवादी जो गांव में निवास करती है इसके प्रयोग को नही कर पा रही है।
2. जब आप कम्प्यूटर पर किसी प्रकार की जानकारी लेना चाहतें हैं तो उसकी प्रामाणिक जानकारी हिन्दी में उपलब्ध नही है। उसे ज्यादातर अंग्रेजी में ही प्राप्त किया जाता है।
3. जिसे अंग्रेजी नही आती वह कम्प्यूटर को चलाने में बहुत परेषानी का अनुभव करता है। क्योंकि जो भी निर्देष प्राप्त होते हैं वह ज्यादातर हिन्दी में न होकर अंग्रेजी में ही रहते हैं।
4. सबसे मुष्किल काम टंकण का होता है। अंग्रेजी में उसका की बोर्ड होता है साथ ही उसे किसी विषेष फांट की जरूरत नही होती जबकि अंग्रेजी के अलावा हिन्दी में फांट उपलब्ध होने के बावजूद उसको सीखना फिर उसे मेल द्वारा भेजने पर भी अनेक समस्यायें आती हैं।
5. यह तकनीक आम आदमी के उपयोग के बाहर है। क्योकि उस तकनीक के लिए बहुत से संसाधनों का उपलब्ध होना जरूरी है साथ ही यह महंगा भी होता है जिसे आम आदमी खरीदने में असमर्थ होता है।
6. यह तकनीक खर्चीली होती है। बिजली का बिल, इन्फास्ट्रक्चर के साथ–साथ सीखने के लिए पैसे देना पड़ता है जबकि इसी को अंग्रेजी भाषा में सीखने में ज्यादा मुष्किल नही आती है।
7. इस तकनीक का एक और नुकसान है कि इससे स्मृति पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। पहले जो अध्यापक कई–कई घंटे बिना देखे व्याख्यान दे देते थे

तथा स्वाध्याय द्वारा वह ज्यादा से ज्यादा पढ़ते थे अब वह इस पर आश्रित रहने लगे हैं। मैने ऐसा भी देखा है कि CD या पेन ड्राइव भूल जाने पर वह उस दिन का व्याख्या ही नही देना चाहते हैं।

8. इसका सारा ताम झाम बिजली पर आश्रित है। और आप जानते हैं कि हमारे देष मे बिजली कितनी रहती है। यदि बिजली कट गयी तो सारे काम ठप हो गये और उस दिन का काम होता ही नही है।
9. इसके उपयोग से हिन्दी भाषा में व्याकरण, कविता और अन्य विधाओं को पढ़ाने में बहुत परेषानी आती है। साथ ही आत्मा विष्वास में कमी पायी जाने लगती है।
10. हिन्दी भाषा के अध्यापन हेतु इस तकनीक में विषेषज्ञों की उपलब्धता सीमित है जिससे इसके प्रचार प्रसार तथा उपयोग में कमी होने से अध्ययन–अध्यापन व्यस्थित नही हो पाता।
11. हिन्दी भाषा मे आधुनिक तकनीक का प्रषिक्षण और अभ्यास कार्य बड़ा सीमित है। इसलिए भी इसमें दक्षता नही प्राप्त होती।
12. हिन्दी भाषा में अनुवाद कार्य तो इस तकनीक से सबसे ज्यादा कठिन तथा अषुद्ध होता है, इसलिए भी यह हिन्दी भाषा के अध्ययन में सुचारू रूप से सफल नही हो पाया है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा के अध्ययन–अध्यापन मे ICT के प्रयोग से कुछ हद तक आसानी आयी है परन्तु अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में अभी वह सफलता नही मिल पायी है जो अंग्रेजी को मिली है इसलिए इस पर अभी बहुत कुछ करना शेष है।

(डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव)

संदर्भ ग्रन्थ

1. शैक्षिक निबन्धः– डॉ. राम शक्ल पाण्डेय, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2
2. सहृदय; सम्पादकः– डॉ. पूरन चन्द ठंडन
3. हिन्दुस्तानीः– सम्पादक – रवि नंदन सिंह

4. शब्द सरोकारः सम्पादक–डॉ. हुकुम चंद राजपाल
5. वैचारिकः डॉ. बाबू लाल शर्मा
6. युद्धरत आम आदमीः सम्पादक–रमणिका गुप्ता
7. Redesigning classroom Environment Road to Perform: Editor – Dr. Harneet Billing

© CGCTA